CHAPTER 38

MUSIC

Doctoral Theses

325. उदीनिया (अश्वनी)
हिन्दुस्तानी शास्त्रीय रागों में षड्ज गान्धार भाव की महत्ता ।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट
Th 15365

सारांश

प्रस्तुत शोध ग्रंथ में 'षड्ज गान्धार भाव' को विस्तार से समझाने का प्रयत्न किया गया है । इस शोध ग्रंथ में 'षड्ज गान्धार भाव' को प्रायोगिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है अर्थात् आधुनिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में 'षड्ज गान्धार भाव' के प्रयोगो को दर्शाने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. संवाद के आधार-भूत तत्त्व 2. संवाद का अर्थ एवं व्युत्पत्ति 3. षड्ज-गान्धार भाव व्याख्यात्मक अध्ययन 4. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में विभिन्न रागांगो में गान्धार भाव का दर्शन । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

326. कपिल कुमार
शास्त्रीय संगीत में एकल वादन एवं सहायक-वाद्य के रूप में तबले की विशिष्ट भूमिका ।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन
Th 15483

सारांश

शोध कार्य में वाद्य की उत्पत्ति दर्शाई गई है । ताल की विवेचन करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि ताल का धातु रूप तल है, जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु का आधार

उसका तल होता है उसके बिना वह प्रतिष्ठित नहीं हो सकती जिसे भित्ति या बुनियाद भी कह सकते हैं । उसी प्रकार गीत-वाद्य एवं नृत्य संगीत की इन तीनों विधाओं की प्रतिष्ठा ताल पर ही हुई है । ताल के साथ लय के महत्व का भी प्रतिपादन किया गया है तथा ताल के पारम्परिक दस प्राणों पर भी विस्तृत विचार किया गया है । अन्ततः यह कहा जा सकता है कि संगत कलाकार की तैयारी, मानसिक एकाग्रता व मुख्य कलाकार से तादात्यमता हाने पर ही सफल व सार्थक हो सकती है । यदि संगतकार मुख्य कलाकार के मिजाज़ को समझकर उसके साथ संगत करे तो उससे उस अलौकिक आनन्द की प्राप्ति हो सकती हे जिसकी कलाकारों से अपेक्षा की जाती है ।

विषय सूची

1. अवनद्ध वाद्य । 2. ताल । 3. तबला सामग्री । 4. तबला एकल वादन के रूप में । 5. तबला वाद्य संगीत के रूप में । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

327. CHATTERJEE (Snigdha)
Trends and Traditions : A Critical Study, with Special Reference to Hindustani Classical Vocal Music.
Supervisor : Prof. Manjusree Tyagi
Th 15363

Abstract

It is a critical study of the current trends of the modern age vis-a-vis our extant traditions in the field of Indian classical music. The twentieth century ushered in many new changes and movements, which have had a deep impact on the state of our music, and given rise to certain new trends. The study deals with only the pure classical vocal forms - Dhrupad, Dhamar and Khayal.

Contents

1. Introduction 2. Significance of tradition in Indian classical music 3. A short review of different Gharanas 4. Compositional forms in Hindustani classical music 5. Indian classical music: Changing profiles 6. Current trends in Hindustani classical music. Conclusion. Bibliography.

328. जैन (मोनिका)

पाँचवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक भारतीय संगीत के विकास का विवेचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

Th 15487

सारांश

शोध प्रबन्ध में पाँचवी शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक के साहित्यिक, सांगीतिक व सांस्कृतिक विवरणों के साथ साथ उक्त कालगत राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक मत-मतान्तरों एवं व्यवस्थाओं की भी भरपूर जानकारी देने का एक लघु-प्रयास है। जो निश्चय ही हमें अपने प्राचीन गौरवशाली एवं परम्परिक संगीत शैलियों से अनेकों वर्षों की संघर्षपूर्ण, दुर्गम, यात्राओं के बाद, आज की वर्तमान कालीन गीत-विधाओं के उद्‌भव तथा उद्‌गम के कारणों का ज्ञान देते हुए हमें इसके भविष्य की झांकी के भी दर्शन कराता है ।

विषय सूची

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि । 2. 5वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक की सांस्कृतिक व्यवस्था एवं विभिन्न ललित कलाओं का विकास । 3. प्रस्तुत कालखण्ड में भारतीय संगीत के विकास का विस्तृत विवेचन । 4. प्रचलित प्रमुख वाद्यों का विवेचन । 5. इस कालखण्ड के प्रमुख ग्रन्थों में उपलब्ध संक्षिप्त सांगीतिक विवरण । उपसंहार। ग्रंथ सूची ।

329. दीक्षित (विशाल)

भारतीय संगीत के क्षेत्र में पुरातत्व का योगदान ।

निर्देशिका : प्रो. मंजूश्री त्यागी

Th 15484

सारांश

शोध प्रबन्ध में पुरावशेषों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । सम्पूर्ण देश की संगीत विषयक पुरातत्व सामग्री का संक्षिप्त विवेचन करते हुए उत्तर प्रदेश से प्राप्त पुरावशेषों का विशेष उल्लेख किया गया है । ऐसी सामग्री पूरे उत्तर प्रदेश में उपलब्ध है । विशेष कर बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अनेक स्थलों से प्राप्त संगीत दृश्य

उल्लेखनीय है । यहां संगीत विषयक सामग्री का विवेचन साहित्य के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है । विभिन्न उदाहरणों में तुलनात्मक सम्बन्ध रंखांकित करने का भी प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. प्रस्तावना । 2. स्थापत्य और संगीत । 3. प्रस्तर मुर्ति शिल्प एवं संगीत । 4. मृण्मूर्तियों में संगीत । 5. संगीत एवं चित्रकला । 6. अन्य पुरातात्विक साक्ष्य । उपसंहार एवं परिशिष्ट ।

330. धर्मपाल

वर्तमान संदर्भ में किराना घराने की गायकी एवं प्रयुक्त बंदिशों का मूल्यांकन ।

निर्देशिका : डॉ. गीता पैन्तल

Th 115488

सारांश

किराना घराने की गायकी कि विशेषता प्रदर्शित रागों में इस परिपोष, उत्तम विलम्बित आलाप, भावानायुक्त स्वर विन्यासों का प्रयोग, एक-एक स्वर को बढ़ाते हुए आलाप होने के कारण गायन कर्णप्रिय लगता है । इस घराने की गायकी का प्रमुख ध्येय 'सूर साधे तो सब सधै' तथा 'सुर गया तो सिर गया' अर्थात् स्वर की तरफ विशेष ध्यान रहता है । किराना घराने में प्रचलित बन्दिशों की विशेषताएँ उल्लेखनीय है। किराना घराने में मुख्यतः सबरस (गुलाम मौला खाँ) एवं हिंगारंग (हुसैन अली) की बन्दिशे प्राप्त होती है और उसकी तालीम भी दी जाती है । सुरों का सौन्दर्य, मिठास, शान्तता, विलम्बिता, भावना प्रधानता प्रमुख विशेषता है । किराना घराने को कायम रखने में इस घराने के प्रतिष्ठित कलाकारों का योगदान सराहनीय है । घराने के विकास एवं पराम्पराओं को आगे बढ़ाने के लिए खाँ साहब ने अपने शिष्यों को सभी प्रकार से तैयार किया और उदर निर्वाह के योग्य बनाया । आपने बालकृष्ण बुवा कपिलेश्वरी, सवाई गन्धर्व, सुरेश माने, ताराबाई, बेहरे बुवा जैसे अच्छे शिष्यों एवं शिक्षकों का निर्माण किया, इन्हीं में आगे कुछ शिष्यों ने - भीमसेन जोशी, हीराबाई, गंगूबाई हंगल, प्रभा अत्रे आदि कलाकारों का निर्माण किया, जो इस घराने की परम्परा एवं गायकी को विकसित करने हेतु प्रयत्नशील रहे हैं और प्रयत्नशील है ।

विषय सूची

1. घराना शब्द की परिभाषा-उद्‌गम एवं उसका विकास । 2. किराना घराने का परिचय एवं गायकी की विशेषताएँ । 3. किराना घराने से सम्बन्धित प्रमुख कलाकारों का परिचय । 4. किराना घराने में गाई जाने वाली बन्दिशों की विशेषताएँ एवं मूल्यांकन । 5. किराना घराने के प्रमुख उस्तादों द्वारा निर्मित प्रसिद्ध बंदिशों का स्वरलिपिबद्ध संकलन । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

331. नरूला (जसपिन्दर)

हिन्दुस्तानी गायन शैलियों पर उर्दू और फ़ारसी का प्रभाव ।

निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

Th 15364

सारांश

मध्यकाल में यवनों के आगमन के बाद भारतीय आम भाषाओं पर बाहरी भाषाएं यानि फ़ारसी और उर्दू का प्रभाव पड़ना आरम्भ हो गया । फलस्वरूप हिन्दुस्तानी संगीत के काव्य से भी परिवर्तन आने लगे । संगीतकारों के नवीन प्रयोगों के परिणाम स्वरूप फ़ारसी और उर्दु भाषाओं के अर्न्तमिलन के साथ गीत के काव्य का नवीनीकरण हुआ । साधारणतया लोगों को ऐसे गीत काव्य रूचिकर प्रतीत हुए। इस प्रकार विभिन्न गायन शैलियां जैसे ध्रुवपद, खयाल, तराना, कव्वाली, कौल, कलबाना आदि गायन शैलियों पर फ़ारसी और उर्दू भाषा का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हुआ । आज भी इस प्रकार के गीत प्राप्त होते हैं और जाने माने कलाकार अपने कार्यक्रमों में शामिल करते हैं । प्रस्तुत शोध प्रबंध में वर्णित विषय पर ही विस्तृत विवेचन करने का प्रयास किया है ।

विषय सूची

1. फ़ारसी एवं उर्दू भाषा के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2.ध्रुवपद गायन विधा पर फ़ारसी और उर्दु भाषा का प्रभाव 3. खयाल गायन शैली का उद्‌भव तथा विकास के उर्दू और फ़ारसी भाषा की भूमिका 4. तराना गायन शैली के विकास में फ़ारसी और उर्दू भाषा की भूमिका 5. कव्वाली शैली एवं फ़ारसी और उर्दू भाषा का संबंध 6. फ़ारसी, उर्दू भाषा तथा ग़जल गायकी -एक अवलोकन। उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

332. पांडे (महेश चन्द्र)

स्वर्गीय पंडित चन्द्रशेखर पन्त जी की सांगीतिक यात्रा : एक अवलोकन।

निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

Th 15367

सारांश

पंडित चन्द्रशेखर पन्त जी का सम्पूर्ण जीवन संगीतमय रहा । आपने अपनी असाधारण प्रतिभा और आजीवन अथक् परिश्रम के बल पर अनमोल संगीत सम्पदा के विशाल भण्डार का निर्माण किया, उसे संगीत जगत के सम्मुख लाकर सहजभाव से समर्पित कर दिया । आपने आधुनिक युग प्रवृत्तियों को लक्ष्य में रखते हुए अनुपम संगीत-सर्जना की । ध्रपद, धमार, ख्याल, टप्पा, अष्टदी, भजन इत्यादि अनेकानेक गीत विधाओं के मर्यादित स्वरूप को पूर्णतः ध्यान में रखते हुए उनका गायन प्रस्तुत किया । इसके अतिरिक्त प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का समालोचनात्मक एवं गहन अध्ययन आदि ऐसे अनेक पक्ष हैं जो पंडित चन्द्रशेखर पन्त जी के बहुआयामी व्यक्तितव की एक झलक मात्र है ।

विषय सूची

1. पंडित चन्द्रशेखर पन्त जी का जीवन वृत्त 2. पंडित चन्द्रशेखर पन्त जी की उपलब्धियां 3. पंडित चन्द्रशेखर पन्त जी की गायन शैली का अवलोकन 4. संगीत शास्त्री एवं संगीत चिंतक के रूप में पंडित चन्द्रशेखर पन्त जी का विशेष योगदान 5. कृतित्व 6. पंडित चन्द्रशेखर पन्त जी से संबंधित विभिन्न विद्वानों, संगीतज्ञो एवं संबन्धियों के विचार एवं संस्मरण । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

333. BALASUBRAHMANYAM (V)

Vizianagaram as a Seat of Music : During the 19th and 20th Centuries with Special Reference to Vocal and Instrumental Music

Supervisor : Prof. Radha Venkatachalam

Th 15362

Abstract

Attempts to portray the grandeur of music in Vizianagaram and the rich contribution to the field of music by the Royal Patrons,

Composers, Musicians, Musicologists, Institutions, Sabha-s and the music loving people of the region, while focussing on both the practical and theoretical aspects. Reveals the presence of a high level of musical activity during the period of study, of two centuries, and the impetus provided by the Royal court and later by the Government and other agencies, which have contributed immensely to the development of music in the spheres of both Laksya and Laksana. The study also brings to light the continuity in the developemtnal aspects of music and the emergence and existence of distingushed styles of playing Vina and Violin in this region. While this represents the practical side of progress, the best of musicians and composers, of both classical and sublime arts, has been drawn in developing the concepts of music, representing the distinctions achieved on the theoretical side.

Contents

1. Introduction 2. Historical perspective 3. Royal patrons of music in Vizianagaram 4. Composers and musicians of Vizianagaram 5. Contribution to the field of Laksya and Laksana 6. Role of music institutions and sabhas in Vizianagaram 7 Vizianagaram as centre of devotional and folk music 8. Vizianagaram - Then and Now. Conclusion.

334. भट्ट (तूलिका)

उत्तर भारतीय विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत शिक्षण के संदर्भ में शिक्षा की भूमिका - एक विवेचनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. राजीव वर्मा

Th 15482

सारांश

संगीत शिक्षण प्रशिक्षण वैदिक काल से लेकर किसी न किसी विधि के अन्तर्गत दिया जाता रहा है इससे पूर्व जब तक कि संगीत को विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में अन्य विषयों की तरह एक पाठ्य विषय के रूप में पढ़ाने की सरकार द्वारा अनुमति प्राप्त नहीं हुई थी । तब तक संगीत का शिक्षण प्रशिक्षण गुरू शिष्य परम्परा विधि के अन्तगर्त ही हुआ करता था । आधुनिक युग में शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के द्वारा प्राचीन परम्पराओं का निर्वाह करना सम्भव नहीं है । आज हम संगीतज्ञों को निम्न चार भागों में विभाजित कर सकते है - कला प्रदर्शक, संगीत शिक्षक, संगीत शास्त्रकार और संगीत निर्देशक ।

विषय सूची

1. संगीत और शिक्षा । 2. संगीत शिक्षण व्यवस्था का इतिहास । 3. विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा । 4. संगीत शिक्षण की पृष्ठभूमि । 5. विश्वविद्यालयों में गायन - वादन के शिक्षकों की समस्याएं । उपसंहार, परिशिष्ट एवं ग्रंथ सूची ।

335. भटनागर (गुजंन)
शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में उत्तर प्रदेश के अल्पप्रचलित गायन के घरानों का विवेचनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. गीता पैन्तल
Th 15480

सारांश

शोध प्रबंध में शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में उत्तर प्रदेश के अल्पप्रचलित गायन के घरानों की समीक्षा की है जैसे अतरौली घराना, फतेहपुर सीकरी घराना, सिकन्दराबाद का रंगीता घराना, खुर्जा घराना, मथुरा घराना, सहसवान घराना, मुरादाबाद घराना, सहारनपुर घराना ।

विषय सूची

1. उत्तर प्रदेश की पृष्ठभूमि । 2. उत्तर प्रदेश में संगीत की स्थिति । 3. अल्पप्रचलित घरानों का वर्णन । 4. घरानों की गायन शैली की विशेषताएँ । 5. घरानों की प्रसिद्ध बंदिशों की स्वरलिपियाँ । निष्कर्ष, परिशिष्ट एवं ग्रंथ सूची ।

336. मिश्र (अप्रमेय)
त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) तथा भारतीय संगीत की परम्परा ।
निर्देशिका : प्रो. मंजूश्री त्यागी
Th 15485

सारांश

त्रिदेवों की सनातनी मिथकीय परिकल्पना वस्तुतः मनुष्य की तीन संज्ञात्मक प्रकृतियों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है । तीन प्रकार के गुणों में से एक की प्रधानता रखने वाले हर मनुष्य के भीतर अनादिकाल से रहने वाली संगीतात्मक

अभिव्यक्ति को लेकर लिखा गया यह शोध प्रबंध ऊपर से ब्रह्मा, विष्णु और महेश के वैदिक, पौराणिक स्वरूपों में संगीत के तत्वों के खोज के साथ-साथ मनुष्य-मात्र के भीतर के आदि संगीत की कथा का पुनर्कथन और विश्लेषण है ।

विषय सूची

1. (क) भारतीय संगीत-तत्व की अवधाराणा और विकास का संक्षिप्त इतिहास (ख) संगीत तत्व में नाद एवं नाद-ब्रह्म की अवधारणा । 2. (क) सनातन भारतीय संस्कृति में त्रिदेवों की अवधारणा (ख) विभिन्न ग्रंथों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश (ग) वैदिक युग में संगीत । 3. (क) पुराणों में त्रिदेवों की सांगीतिक परम्परा (ख) सांगीतिक ग्रंथों में त्रिदेवों की परम्परा । 4. (क) सांगीतिक विधाओं में त्रिदेव (ख) विभिन्न सांगीतक ग्रंथों में त्रिदेवों से संबंधित बंदिशें । 5. सम्प्रदायों में त्रिदेवों की सांगीतिक पृष्ठभूमि । उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

337. रंजन कुमार

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गिटार वाद्य एवम् उसमें किए गए परिवर्तनों के संदर्भ में विभिन्न वाद्यों के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

Th 15481

सारांश

शोध-प्रबन्ध के अन्तर्गत गिटार वाद्य की उत्पत्ति, विकास, परिवर्तन, तकनीक, वाद्य के कलाकार अन्य वाद्यों का इस पर प्रभाव, गिटार पर बजाई जाने वाली गतों आदि के विषय में विस्तृत वर्णन किया गया है ।

विषय सूची

1. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में वाद्य, महत्त्व, वर्गीकरण तथा गिटार वाद्य का उद्‌गम, विकास व भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्थान । 2. गिटार वाद्य एवं उसमें किए गए परिवर्तनों के संदर्भ में विभिन्न वाद्यों का प्रभाव । 3. गिटार के विभिन्न प्रकार, अंग व वादन की तकनीक । 4. गिटार वाद्य पर राग प्रस्तुतिकरण, कलाकार व गतें । उपसंहार, परिशिष्ट एवं ग्रंथ सूची ।

338. शुक्ला (पिंकी)

बिहार के सांस्कृतिक परिवेश में मिथिलाँचल का सांगीतिक योगदान ।

निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

Th 15486

सारांश

शोध-कार्य में सबसे पहले मैंने बिहार की संस्कृति में निहित लोक-संगीत एवं शास्त्रीय गायन की परम्परा को रखा है । तत्पश्चात चरण में विद्यापति को केन्द्र में रखकर उनके विपुल पद्य साहित्य को, जो सदियों से मिथिला के लोक-जीवन में उत्साह, भक्ति और समर्पण का संचार करता रहा है, उसमें निहित गेयता और सांगीतिक तत्वों को अपने शोध का आधार बनाया है ।

विषय सूची

1. बिहार की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि । 2. मिथला का भौगोलिक परिदृश्य एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि । 3. मिथिला के महत्वपूर्ण ग्रंथ । 4. मिथलांचल में शास्त्रीय गायन की परम्परा । 5. मिथिलांचल में प्रचलित विभिन्न लोकगायन शैलियाँ । 6. वर्तमान स्थिति । निष्कर्ष एवं ग्रंथ सूची ।

339. सोमा सिंह

रागांग राग वर्गीकरण : उद्‌भव, विकास तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में औचित्य ।

निर्देशक : प्रो. अजीत सिंह पैन्तल

Th 15366

सारांश

थाट-पद्धति में बहुत बड़ी संख्या में 'अपवाद' अथवा त्रुटिपूर्ण वर्गीकरण के उदाहरण दिखाई देते हैं और इस कारण से यह पद्धति भी पूर्णतया उपयुक्त सिद्ध नहीं होती । यदि थाटों की संख्या में वृद्धि कर भी दी जाए तो भी समस्त रागों का वर्गीकरण एक ही आधार लेकर इनमें करना असंभव प्रतीत होता है । औडव, षाडव तथा एक ही स्वर के दोनों रूप युक्त रागों की संख्या बहुत बड़ी है और इन्हें किसी भी प्रकार थाटों में वर्गीकृत नही किया जा सकता । रोगों का वैज्ञानिक,

सुव्यवस्थित तथा त्रुटिरहित वर्गीकरण केवल रागांग-पद्धति से ही हो सकता है । वैज्ञानिक पद्धति वही मानी जा सकती है जिसमें शास्त्र एवं प्रयोग अथवा सिद्धांत एवं प्रयोग में कहीं कोई विरोधाभास ना हो । इसीलिए थाट-पद्धति एक सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक वर्गीकरण पद्धति नहीं है जबकि रागांग-पद्धति एक प्रयोग आधारित पद्धति है, अतः इसमें मूल रागों और उनके रागांग रागों का पूर्णतया वैज्ञानिक रीति से तर्कपूर्ण तथा त्रुटिरहित वर्गीकरण किया जा सकता है । वैसे भी थाट-पद्धति में पहले थाट, तत्पश्चात् इनमें रागांग, बताने से बेहतर है कि सीधे रागांग ही विद्यार्थियों को बताए जाएं ।

विषय सूची

1. राग-वर्गीकरण का ऐतिहासिक क्रम 2. रागांग 3. आधुनिक रागांग 4. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रागांग-पद्धति का महत्त्व तथा औचित्य । उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

M.Phil Dissertations

340. कौशिक (ऋचा)
उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'सा-म' व 'रे-प' स्वर संगति की भूमिका एवं महत्व ।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

341. गोस्वामी (विनीत)
व्यावसायिक दृष्टिकोण से संगीत शिक्षण में शोध की नवीन संभावनायें ।
निर्देशिका : प्रो. मधुबाला सक्सेना

342. चौधरी (विजेता)
उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में कंठ संगीत की बंदिशों का सौन्दर्यात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल

343. जसप्रीत कौर
ठुमरी का पूरब अंग : एक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. गीता पैन्तल

344. जुयाल (संगीता)
सामूहिक गायन शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में 'आधार-स्वर' का अध्ययन (एक समालोचनात्मक अध्ययन) ।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

345. जोशी (निधी)
आचार्य बृहस्पति जी की बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. गीता पैन्तल

346. जोशी (व्यापक)
संगीत निर्देशन में शास्त्रीय संगीत की भूमिका ·
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

347. झा (शिल्पी)
मैथिली लोकगीतों का सांगीतिक वैशिष्ट्य ।
निर्देशिका : प्रो. मधुबाला सक्सेना

348. डिम्पी
वर्तमान संगीत में सितार वादन शैली के मुख्य आयाम एवं नवीन प्रवृतियाँ ।
निर्देशक : डॉ. प्रतीक चौधरी

349. तिवारी (मंजुल कुमार)
अवधी लोकगीतों में निहित भक्ति का स्वरूप ।
निर्देशिका : प्रो. मधुबाला सक्सेना

350. KANT (Toshar)
Digital Information Retrieval Methods and their Importance for Research in Indian Classical Music.
Supervisor : Prof. Manjushree Tyagi

351. त्रिवेदी (आग्रपाली)
राग मारवा की विभिन्न बंदिशों का साहित्यिक एवं सांगीतिक मूल्यांकन।
निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

352. दास (कान्ता कावेरी)
असम के जनजीवन में ज्योति संगीत : एक विश्लेषात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

353. पवन कुमार
पंजाब के लोक संगीत में होने वाले आधुनिक कालीन विभिन्न प्रयोग ।
निर्देशिका : प्रो. सुनीरा कासलीवाल

354. पाराशर (स्मिता)
विभिन्न थाटों के अंतर्गत दोनों निषाद प्रयोग होने वाले कुछ रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. अलका नागपाल

355. बहुगुणा (वन्दना)
पंडित श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर जी के कुछ दिवंगत शिष्यों का संगीत के क्षेत्र में योगदान ।
निर्देशिका : प्रो. मंजुश्री त्यागी

356. भगत (उमेश नाथ प्रसाद)
खुर्जा घराने के महान रचनाकार रामदास जी के कृतित्व - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. कृष्णा बिष्ट

357. मिश्र (दीनानाथ)
मानव जीवन के नैतिक विकास में संगीत की भूमिका ।
निर्देशिका : प्रो. गीता पैन्तल

358. विजय कुमार
आधुनिक काल में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में स्वस्थान नियम की प्रासंगिकता ।
निर्देशिका : प्रो. नजमा परवीन अहमद

359. VISHAL
Role of Studios and Recorded Material in Promoting Indian Classical Music.
Supervisor : Prof. Sunita Dhar

360. सेठी (वन्दना)
तंत्री वाद्यों में लयकारियों का विस्तृत अध्ययन - सितार के विशिष्ट संदर्भ में।
निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर

361. शर्मा (अनुपमा)
दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए शास्त्रीय संगीत में नवीन उपकरणों का प्रयोग एक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. अंजलि मित्तल

362. शर्मा (ओम)
हिमाचल की विविध लोकसांगीतिक विधाओं में वाद्यों की भूमिका ।
निर्देशिका : प्रो. सुनीरा कासलीवाल

363. SHARMA (POOJA)
Development and New Avenaes of Notation System in Hindastani Classical Music.
Supervisor : Prof. Anupum Mahajan

364. शर्मा (संगीता)
सामदेव में संगीत की परम्परा ।
निर्देशक : डॉ. राजीव वर्मा

365. शास्त्री (गार्गी)
नादब्रह्मवाद और संगीत एक विवेचनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. मधुबाला सक्सेना

366. सिद्धु (अजंना)
विभिन्न थाटों के अर्न्तगत दोनों गंधार प्रयुक्त होने वाले कुछ रागों का अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. अनुपम महाजन

367. सूद (गौरव)
ख्याल शैली में जयदेव की अष्टपदियों की रचना - ग्वालियर घराने के संदर्भ में ।
निर्देशिका : प्रो. मंजूश्री त्यागी